सहभागिता और अनुभव आधारित पर्यावरणीय शिक्षा की नवोदित पाठ्यचर्या

अश्विनी कुमार पाठक*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पाठ्यपुस्तकों और कक्षा से परे सीखने-सिखाने के विषय पर अधिक संवेदनशील है। पाठ्यचर्या संबंधी विषयों के शिक्षण को कक्षाओं की सीमा से बाहर ले जाकर वास्तविक जीवन और अनुभवों से जोड़ने का सबसे बड़ा लाभ विद्यार्थियों के वैयक्तिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देना हो सकता है। विद्यार्थियों में रचनात्मकता, जिज्ञासा और व्यक्तिगत समझ को विकसित करना उनके लिए आजीवन लाभकारी सिद्ध होगा। किताबों और कक्षा के बाहर भी कई समसामयिक संकल्पनाएँ हैं, जिन्हें रचनात्मक अनुभवों से प्राप्त किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के उद्देश्यों पर आधारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 ने विद्यालयी पाठ्यचर्या की व्यावहारिक रूपरेखा को संतुलित बनाने का प्रयास किया है। पर्यावरण से जुड़ी चुनौतियाँ, वर्तमान समय की एक गंभीर समस्या है और एन.ई.पी. 2020 की इस संवेदनशीलता को एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 ने बखूबी समझा है। इसने पूर्व-प्रचलित दृष्टिकोण और शिक्षण-विधियों को संवर्धित करते हुए पर्यावरणीय शिक्षा का एक नवीन, एकीकृत, कौशल-आधारित और आधुनिक शिक्षण-अधिगम उपागमों पर आधारित पाठ्यचर्या प्रारूप विकसित किया है। इस लेख में एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षा, पर्यावरणीय जागरूकता, रचनात्मकता और व्यावहारिक कौशल विकास को बढ़ावा देने पर बल दिया गया है।

संतुलित विकास को सुनिश्चित करने के लिए शैक्षणिक पाठ्यक्रम में पाठ्येत्तर-गतिविधियों और सहगामी-क्रियाओं को विभिन्न रूपों में संयोजित करना होगा। अनिवार्य विषयों, कौशलों और क्षमताओं संबंधी एकीकरण के मुद्दे पर एन.ई.पी. 2020 कहती है कि "सभी स्तरों पर पर्यावरण जैसे विभिन्न समसामयिक विषयों से संबंधी कौशलों को सिखाना विद्यार्थियों को एक अच्छे, सफल, अभिनव

**पोस्ट-डॉक्टोरल फेलो*, शिक्षा संकाय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर 273 009

अनुकूलनीय और सकारात्मक परिणाम देने वाला व्यक्ति बनाने हेतु आवश्यक है।"

प्रौद्योगिकी के उपयोग और विषयों के एकीकरण जैसे मुद्दे पर एन.ई.पी. 2020 कहती है कि "शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक रूप से ध्यानाकर्षण वाले विषयों, जैसे — अक्षय-उर्जा, जल-संरक्षण, पर्यावरण-संरक्षण और हरित-उपायों आदि पर आर्टिफिशियल-इंटेलिजेंस आधारित प्रौद्योगिकी की सहायता आवश्यक है।"

प्रकृति और पर्यावरण के स्वरुप व संतुलन को बनाए रखने के लिए पर्यावरणीय साम्यता, संरक्षण एवं संवर्धन संबंधी विविध उपायों का चिंतन-मनन समकालीन परिस्थितियों की माँग भी है और अनिवार्यता भी। शिक्षा संबंधी नीति-निर्माताओं ने इस बात को भली-भाँति समझा भी है और वर्तमान परिदृश्य में इस विषय पर पर्याप्त ध्यान भी दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने जहाँ पर्यावरणीय महत्ता को स्वीकार करते हुए इससे संबंधित अनेकानेक शैक्षिक प्रावधान की सैद्धांतिक रुपरेखा प्रस्तुत की है, वहीं इसे मूर्त रूप देने के लिए विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 ने व्यावहारिक क्रियान्वयन संबंधी रणनीति निर्माण में भी कोई कसर नहीं छोड़ी है।

पर्यावरणीय शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसा

इक्कीसवीं सदी के आरंभ काल से ही पर्यावरणीय समस्याओं ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है। ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समक्ष भी यह विषय न केवल चिंतनीय, अपितु मानव अस्तित्व को बनाए रखने के एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में प्रासंगिक रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनेक संदर्भों एवं प्रसंगों में इस विषय के प्रति अपेक्षित परिणामों के लिए प्रत्याशित होने के साथ ही भविष्य-दृष्टा भी है। इस विषय पर वह प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और जीवन-शैली को सराहती भी है और उसकी प्रासंगिक उपादेयता एवं अनुकरणीय निहितार्थ की ओर इशारा भी करती है। यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अपने आधार सिद्धांतों में मुख्य रूप से विद्यार्थी में अवधारणात्मक समझ विकसित करने पर बल देने के साथ-साथ रचनात्मक और तार्किक सोच पर आधारित निर्णयन-क्षमता के विकास, नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों का विकास, जीवन-कौशलों का विकास, बहु-विषयक एवं समग्र शिक्षा का विकास आदि अनेक बुनियादी नवाचारों को लेकर चलने की बात करती है; जो पर्यावरणीय मुद्दों के लिए नितांत आवश्यक एवं सहायक हो सकते हैं। विस्तृत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रतिवेदन में पर्यावरणीय शिक्षा एवं तत्संबंधी मुद्दों को लेकर निम्नलिखित प्रसंगों एवं संदर्भों की चर्चा की गई है —

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अपने प्रतिवेदन के चतुर्थ अध्याय 'स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षणशास्त्र — अधिगम समग्र, एकीकृत, आनंददायक और रुचिकर होना चाहिए' के खंड 'अनिवार्य विषयों, कौशलों और क्षमताओं का शिक्षाक्रमीय एकीकरण' के अंतर्गत उपखंड 4.23 में स्पष्ट करती है कि विद्यार्थियों को व्यक्तिगत तौर पर पाठ्यक्रमों के चुनाव हेतु एक लचीला विकल्प उपलब्ध करवाना आवश्यक है। तथापि कुछ महत्वपूर्ण विषयों से संबंधित कौशलों एवं

क्षमताओं का विकास अनिवार्य रूप से सभी के अंदर किया जाना चाहिए। इन विषयों में पर्यावरणीय संबंधी जागरूकता, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, स्वच्छता, साफ-सफाई और विभिन्न समसामयिक मुद्दे आ जाते हैं।

इसी अध्याय के उपखंड 4.24 में विभिन्न समसामयिक विषयों के साथ-साथ पर्यावरणीय शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण व्यावहारिक कौशलों के विकास हेतु समुचित शिक्षाक्रमीय और शिक्षणशास्त्रीय कदम उठाने की आवश्यकता को स्पष्ट किया गया है।

अध्याय 4 का उपखंड 4.27 कहता है कि "प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के निहितार्थ को आधुनिक भारत की सफलताओं के संदर्भ में परिलक्षित किया जाना आवश्यक है, साथ-साथ तत्संबंधी ग्रहणीय तत्वों की उपादेयता के आधार पर ही शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण जैसे विषयों के संबंध में भारत के भविष्य की आकांक्षाओं की स्पष्ट भावना का समाहिकरण किया जाए"।

अध्याय 4 का उपखंड 4.28 में पर्यावरण के प्रति सम्मान जैसे मुद्दे विद्यार्थियों को कम उम्र में 'सही को करने' के महत्व को सिखाने अर्थात बाल्यकाल से ही ऐसे विषयों के प्रति नैतिक आचरण एवं दृष्टिकोण के विकास हेतु व्यवहार-परिमार्जन, परिशोधन एवं परिवर्तन हेतु आवश्यक पाठ्यचर्यक गतिविधियों एवं पाठ्यसहगामी क्रियाओं को सम्मिलित करने की बात की गई है।

अध्याय 4 का ही उपखंड 4.32 परंपरागत व्यवस्था में नवाचार की बात को स्पष्ट करते हुए पर्यावरणीय हितों (कागज के लिए वनों की कटाई) को ध्यान में रखते हुए, विद्यार्थियों हेतु सॉफ्ट-वर्जन में भी पुस्तकों की उपलब्धता की बात करता है। इससे विद्यार्थियों को लागत-मूल्य संबंधी राहत भी मिलेगी।

अध्याय 5 'शिक्षक' के लिए उपखंड 5.24 में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों (बी.एड.) में समावेशी-शिक्षा को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ संविधान में वर्णित मौलिक-कर्तव्यों और संवैधानिक प्रावधानों के पालन पर भी विशेष बल दिया गया है। इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि पर्यावरण के प्रति जागरूकता और उसके संरक्षण तथा सतत विकास के प्रति संवेदनशीलता को भी उचित रूप से एकीकृत किया जाएगा, ताकि पर्यावरणीय शिक्षा विद्यालयी पाठ्यचर्या का एक अभिन्न अंग बन सके।

अध्याय 11, 'समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर' के उपखंड 11.8 में यह चर्चा की गई है कि सभी उच्चतर-शिक्षण संस्थानों में नवीन एवं लचीले, क्रेडिट-आधारित पाठ्यक्रम, जिनमें सामुदायिक जुड़ाव और सेवा, पर्यावरणीय शिक्षा तथा मूल्य आधारित शिक्षा से संबंधित विषय, शामिल किए जाएँ। यहाँ पर्यावरणीय शिक्षा में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता, जैविक विविधता का संरक्षण, जैविक संसाधनों का प्रबंधन और जैव विविधता, वन एवं वन्यजीव संरक्षण तथा सतत विकास व आवास (रहने के क्षेत्र) आदि को शामिल किया जाए। साथ ही साथ इन मुद्दों पर सीखने के व्यावहारिक पक्षों पर विशेष बल दिया जाए।

अध्याय 12 'सीखने के लिए सर्वोत्तम वातावरण व विद्यार्थियों को सहयोग' के लिए उपखंड 12.9 (विद्यार्थी गतिविधि और भागीदारी) में नीति ने यह

स्पष्ट किया है कि विद्यार्थी, शिक्षा प्रक्रिया के केंद्रबिंदु में हैं। अतः विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक-प्रक्रिया को जीवंत बनाना अधिक परिणामदायी होगा। पर्यावरणीय विषयों को जीवंत बनाने हेतु पर्यावरण क्लब जैसी व्यवस्थाएँ आवश्यक होंगी।

अध्याय 17 'नवीन राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन के माध्यम से सभी क्षेत्रों में गुणवत्तायुक्त अकादमिक अनुसंधान को उत्प्रेरित करना' के लिए उपखंड 17.2 में वैश्विक स्तर पर आर्थिक, भौतिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और प्रौद्योगिकीय विकास संबंधी अनुसंधानों के महत्व और प्रासंगिकता को स्वीकार करते हुए, ऐसे समसामयिक मुद्दों पर गुणवत्तापरक शोध के माध्यम से भारत की नेतृत्व क्षमता विकसित करने की आवश्यकता स्पष्ट की गई है। जलवायु परिवर्तन, मशीन-लर्निंग, कृत्रिम-बुद्धिमत्ता (ए.आई.) आदि कुछ अन्य विषयों की प्रासंगिकता भी विचारणीय है।

अध्याय 17 के ही उपखंड 17.4 में विद्यार्थियों के अंदर पर्यावरणीय आयामों और चुनौतियों की गहरी समझ विकसित करने हेतु उच्च-स्तरीय अंतर:विषयक अनुसंधान-क्षमता विकसित करने की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया गया है।

प्रतिवेदन के भाग तीन 'अन्य केंद्रीय विचारणीय मुद्दे' के लिए अध्याय बीस 'व्यावसायिक शिक्षा' के उपखंड 20.6 में विभिन्न महत्वपूर्ण एवं समसामयिक मुद्दों पर हो रहे नवाचार एवं अनुसंधान को व्यावसायिक आयाम से जोड़ते हुए, शिक्षण संस्थानों में ऐसे पाठ्यक्रम संबंधी कार्यक्रमों को लाने की बात की गई है जो भारत में स्वास्थ्य, पर्यावरण और दीर्घकालिक स्वस्थ जीवन के महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों पर आधारित हों। इससे न केवल तत्संबंधी क्षेत्रों के विशेषज्ञ तैयार होंगे, वरन तत्संबंधी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी संवर्धित होंगे।

अध्याय 22 'भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन' के लिए उपखंड 22.1 में प्राचीन भारतीय संस्कृति और साहित्य से उद्धृत प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण की परंपरा को उच्च प्राथमिकता तथा उस पर आधारित राष्ट्र की पहचान को सुरक्षित करते हुए 'अतुल्य भारत' में निहित भावनाओं को विभिन्न माध्यमों से प्रोत्साहित करने की आवश्यकता को उजागर किया गया है।

अध्याय 23 'प्रौद्योगिकी का उपयोग और एकीकरण' के लिए उपखंड 23.13 में जीवन जीने तथा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के तरीकों को प्रभावित करने की क्षमता रखने वाले परिवर्तनकारी प्रौद्योगिक, जैसे — अक्षय-ऊर्जा, जल-संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, संवहनीय कृषि, हरित उपाय आदि विषयों पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) आधारित प्रौद्योगिकी के विकास तथा इनके प्रयोग से जुड़े नैतिक मुद्दों को सामने लाने की आवश्यकता के साथ-साथ ए.आई. आधारित प्रौद्योगिकी के उपयोग संबंधी बारीकियों (जैसे — डाटा-संधारण, डाटा-संरक्षण, इनकी गोपनीयता, सुरक्षा तथा तत्संबंधी कानूनी प्रावधानों की जागरूकता बढ़ानें) की भी चर्चा है।

एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों पर आधारित एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 में पर्यावरणीय शिक्षा संबंधी सुझाव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विद्यालयी शिक्षा के 5+3+3+4 संबंधी संरचना की संस्तुति करती है, अतएव उसके उद्देश्यों पर आधारित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा विद्यालयी शिक्षा 2023 ने तत्संबंधी चार स्तरों (बुनियादी स्तर 3–8 वर्ष, प्रारंभिक स्तर 8–11 वर्ष, मध्य स्तर 11–14 वर्ष और माध्यमिक स्तर 14–18 वर्ष) पर आधारित पाठ्यचर्या की विस्तृत चर्चा अपने प्रतिवेदन में प्रस्तुत की है। प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा को एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 ने 'द वर्ल्ड अराउंड अस' की संज्ञा देते हुए बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा के उपयोग के माध्यम से पर्यावरणीय संकल्पनाओं के प्रति व्यवस्थित समझ विकसित करने की बात कही गई है।

वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति एन.ई.पी. 2020 की संवेदनशीलता को एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 ने बखूबी समझा है और तत्संबंधी पूर्व-प्रचलित दृष्टिकोण एवं संवर्धित शिक्षण-विधियों को समाहित करते हुए पर्यावरणीय शिक्षा का एक नवीन, एकीकृत तथा कौशलों के विकास को सुनिश्चित करने वाले उत्तमतर पाठ्यचर्या प्रारूप का विकास किया है। पर्यावरणीय संकल्पनाओं के समुचित आत्मसातीकरण के लिए एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 ने सभी चारों स्तरों पर अलग-अलग उद्देश्यों, शिक्षण-विधियों तथा अपेक्षित परिणामों को प्राप्त कराने वाली विविधतापूर्ण पाठ्यचर्या को संयोजित किया है।

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का अध्याय 3 'लर्निंग अबाउट एंड केयरिंग फॉर द एनवायरमेंट' न केवल पर्यावरणीय साक्षरता और पर्यावरणीय मुद्दों को समझने पर बल देता है, बल्कि विभिन्न गतिविधियों और क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को पर्यावरणीय मुद्दों को महसूस भी करवाना चाहता है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के अनुसार पर्यावरणीय शिक्षा, पर्यावरण से जुड़े विभिन्न मुद्दों के प्रति, मानव और प्रकृति दोनों के मध्य भावनात्मक जुड़ाव, व्यावहारिक परिमार्जन तथा संज्ञानात्मक समझ को विकसित करने की एक संतुलित प्रक्रिया है। पर्यावरणीय शिक्षा से संबंधित पाठ्यचर्या की प्रकृति स्वभावतः अंतःविषयक है। पर्यावरणीय शिक्षा को प्रभावी बनाने में प्राचीन भारतीय पारंपरिक दृष्टिकोण तथा वैदिक साहित्य हर एक आयाम से अनुकरणीय है, इन साहित्यों में मनुष्य और प्रकृति के लौकिक एवं अलौकिक दोनों अंतर-संबंधों की तार्किक विवेचना मौजूद है। वर्तमान परिस्थितियाँ बिल्कुल बदल चुकी हैं और ऐसे विषय चिंतनीय बन गए हैं। इसलिए तत्कालीन पर्यावरणीय समस्याओं के साथ-साथ भविष्य में उनसे बचने का उपाय ढूँढ़ना भी एक अलग महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। दुनिया संकट के उस दौर से गुजर रही है जिसमें प्रमुख समस्याएँ—पेयजल की कमी, भूमि, वायु और जल प्रदूषण, अपशिष्ट अधिभार, निर्वनीकरण, प्राकृतिक आवासों का नुकसान, जैव-विविधता पर संकट, समुद्र-स्तर का बढ़ाव, जलवायु परिवर्तन आदि हैं। इन सबसे उबरने और सचेतने के लिए आने वाली पीढ़ी में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना बेहद जरूरी है।

इसके लिए एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023, पर्यावरणीय विषय को संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में एक केंद्रीय-विषय के रूप में देखना चाहता है, इसलिए अब हर एक स्तर पर यह किसी न किसी रूप में अनिवार्य होगा। इसके लिए पर्यावरणीय शिक्षा के जो उद्देश्य एन.सी.एफ. -एस.ई. 2023 ने निर्धारित किए हैं उनमें पारिस्थितिकी, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों के मध्य अंतर्संबंध स्थापित करते हुए पर्यावरणीय साक्षरता और समझ विकसित करना आवश्यक है। पर्यावरणीय शिक्षा का शिक्षण अनुभव-आधारित उपागम के माध्यम से किया जाना सर्वोत्तम है, जिसमें खुली चर्चा और बहस को विशेष स्थान मिलना चाहिए। पूर्व में प्रचलित, परीक्षा और मूल्यांकन आधारित शिक्षण-उपागम ने इसे सूचनाओं तक सीमित विषय बना दिया था, लेकिन अब अनुभव-आधारित शिक्षण उपागम यह सुनिश्चित करेगा कि विद्यार्थी तत्संबंधी अवधारणा को कैसे आत्मसात करें। पर्यावरणीय शिक्षा के शिक्षण की कुछ प्रमुख विशेषताओं में पहला कदम — विद्यार्थी को पर्यावरणीय आयामों और घटकों, उनके परिवेश और स्थानीय प्राकृतिक स्थलों एवं छटाओं से आनुभवात्मक परिचय तथा तादात्म्य स्थापित करवाना। दूसरा कदम — विद्यार्थियों द्वारा पूर्व में सीखे तथा संचयी ज्ञान पर आधारित शिक्षण-उपागम का उपयोग करते हुए विषय के प्रति जिज्ञासा, रोचकता, तार्किकता, सहभागिता और सम्मान की ओर ले जाना। बुनियादी स्तर में पर्यावरणीय-घटकों से परिचय करवाना। इसी तरह क्रमागत प्रारंभिक और मध्य स्तर में उनके संचयी पूर्व ज्ञान पर आधारित संकल्पनाओं के प्रति तार्किक व अमूर्त चिंतन क्षमता का विकास तथा माध्यमिक स्तर में विद्यार्थियों की रुचि, दृष्टिकोण और व्यावहारिक पक्ष से कहीं आगे बढ़कर पर्यावरण के प्रति सम्मान विकसित करना है। उनमें मानवीय एवं पर्यावरणीय संबंधों की बारीकियों को स्वच्छंद रूप से समझने एवं सीखने का बहुआयामी एवं बहुस्तरीय वातावरण का निर्माण करना हो सकता है। तीसरे कदम है — सतत एवं एकीकृत शिक्षा के द्वारा दृष्टांत/उदाहरण प्रस्तुतीकरण, विद्यार्थियों में सीखने की स्वतंत्रता को पोषित करना, अर्थात किसी भी संकल्पना को व्यावहारिक जीवन से जोड़कर उदाहरण प्रस्तुतिकरण बच्चों में कक्षा के बाहर भी प्रासंगिक हो सकता है। अतः पर्यावरणीय संकल्पनाओं से जुड़े मुद्दों को दैनिक जीवनशैली के अनेकानेक उदाहरणों द्वारा सिखाना, विद्यार्थियों के लिए आजीवन उपयोगी एवं संस्मरणीय बना रह सकता है। चौथे कदम पर पर्यावरणीय शिक्षा को विविधतापूर्ण बनाने हेतु विभिन्न बहुमुखी गतिविधियों को माध्यम बनाया जा सकता है जिनमें — वृत्तचित्र, यात्राएँ, विशेषज्ञों के साथ संवाद, समूह परियोजनाएँ, निबंध-लेखन आदि प्रमुख हैं। पर्यावरणीय सजगता की जिम्मेदारी तथा तत्संबंधी मूल्यों के विकास को प्रेरित करने वाली शिक्षण सहायक सामग्री (टी.एल.एम.) को उपयोग में लाया जाना चाहिए, तत्संबंधी टी.एल. एम. का विकास, विद्यार्थी की स्वाभाविक प्रकृति, सामाजिक वातावरण, पारस्परिक संबंधों की समझ, अंतःक्रिया तथा रुचि व क्षमताओं आदि को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। शिक्षणशास्त्र में किए गए ऐसे नवाचारों से विद्यार्थियों में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति न केवल, कारण एवं प्रभाव

संबंधी नवीन दृष्टिकोण का विकास होगा वरन उनमें उपचारात्मक तथा सकारात्मक संभावनाओं के प्रति भी नवीन प्रवृत्ति और दृष्टिकोण विकसित किए जा सकते हैं। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 पर्यावरण को हुए नुकसान की भरपाई हेतु व्यावहारिक और जीवनशैली से संबंधित ऐसी संभावनाओं और सकारात्मक उदाहरणों को प्रस्तुत करने के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करता है; जो न केवल व्यक्ति वरन समुदायों और राष्ट्र के हितों पर भी लागू हों।

विद्यालयी स्तर के सभी चरणों में विद्यार्थियों का पर्यावरण के बारे में सीखना और उसकी देखभाल करना (उपखंड 3.4) एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का एक अनिवार्य उद्देश्य एवं अभिन्न अंग है, जो इसके विभिन्न पहलुओं में प्रतिबिंबित भी होता है। 'हमारे आस-पास की दुनिया' के अंतर्गत विद्यार्थियों के अंदर अपने आस-पास के प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति सम्मान विकसित करना एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। प्रारंभिक स्तर में विद्यार्थियों में अपने सामाजिक एवं प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता के विकास को महत्व दिया गया है। 'हमारे आस-पास की दुनिया' में विद्यार्थियों द्वारा पर्यावरण के विषय में प्राप्त किए गए प्रारंभिक ज्ञान को धीरे-धीरे विस्तारित करना आवश्यक है, जिसके लिए पर्यावरण-संबंधी एक क्षेत्र के ज्ञान का दूसरे क्षेत्र में (अंतःविषयक) उपयोग करते हुए एक समेकित दृष्टिकोण विकसित करना भी अत्यंत आवश्यक है। इससे पर्यावरण को देखने, समझने, उससे जुड़ने से संबंधित मानकों का विकास होता है। शैक्षणिक प्रक्रियाओं में प्रकृति की देखभाल (जैसे — पौधारोपण, जल संरक्षण, जीव-जंतुओं का अवलोकन आदि) पर बल दिए जाने पर विशेष बल है। इसके लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि विद्यार्थियों को इस स्तर पर 'स्वयं के क्रियाकलापों' द्वारा सीखने का अवसर मिले। इस स्तर पर विद्यार्थी मानव-समाज और प्राकृतिक-पर्यावरण की परस्पर निर्भरता को समझने लगते हैं और वे अपनी संस्कृतियों, प्रथाओं आदि में मौजूद मानव-समुदाय और पर्यावरण के मध्य अंत:संबंधों को स्थापित करने लगते हैं। वे उसकी सराहना करने लगते हैं कि प्राकृतिक व्यवस्था कैसे उनके और अन्य सह-जीवियों के लिए जीवन की आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करती है। आगे फिर यह भी समझने लगते हैं कि पर्यावरण के बदलाव के साथ-साथ जीवन की परिस्थितियाँ कैसे बदलती हैं। इन सभी गुत्थियों को समझने के लिए उन्हें छोटी-छोटी खोज, सर्वेक्षण, यात्राएँ और अवलोकन आदि का अवसर मिलना चाहिए। इस चरण में ऐसी विषयवस्तुओं का चयन होना आवश्यक है, जो विद्यार्थियों में प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करवा सकें। वह विषयवस्तु भौगोलिक विशेषताओं की विविधता से परिपूर्ण हो तथा जिसमें जीव-जंतुओं और वनस्पतियों का समागम हो। विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अनुराग विकसित करने के लिए लोक-कथाएँ, लोकगीत, मौखिक-इतिहास और पर्यावरण से जुड़े विभिन्न स्थानीय मामलों के अध्ययन आदि को भी शामिल किया जा सकता है।

मध्य स्तर में विद्यार्थी प्राकृतिक संसाधनों के स्थान-विषयक वितरण को समझते हैं और संसाधनों के विषय में स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर पर घटित होने वाली प्राकृतिक घटनाओं तथा

मानव जीवन के बीच परस्पर संबंधों एवं उन पर निर्भरता और संरक्षण संबंधी संकल्पनाओं का बोध (समझ विकसित) करते हैं। मिडिल स्टेज में पर्यावरण से संबंधित अवधारणाओं को विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में एकीकृत किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी अगले स्तर पर 'पर्यावरण संबंधी ज्ञान' तथा तत्संबंधी विचारों की गहरी समझ विकसित करने हेतु सक्षम बन सकें। सीखने के नवीन प्रतिमानों में विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के अंतर्विषयक संबंधों के माध्यम से पर्यावरण को समझना शामिल है, जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण के माध्यम से आस-पास के सजीव और निर्जीव संसार में होने वाली आपसी अंतःक्रिया को समझ सकना, संसाधनों का स्थानीय वितरण, उनका संरक्षण, मानव जीवन और प्राकृतिक घटनाओं के बीच परस्पर निर्भरता आदि को समझना आवश्यक है। इन सबसे संबंधित विषयवस्तु और शिक्षण-विधियाँ विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाती हैं और पर्यावरण के देखभाल के प्रति उनमें सूझ विकसित करती हैं। विद्यार्थी जहाँ विज्ञान के माध्यम से प्राणियों की विविधता, परिवेश, अनुकूलन, जीवन के लिए आवश्यक परिस्थितियों आदि संकल्पनाओं को प्रत्यक्षतः सीखते हैं। वहीं सामाजिक विज्ञान के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों का स्थानिक वितरण, समाज के प्रत्येक इकाई तक उन संसाधनों की उपलब्धता, वितरण-असमानता आदि पक्षों को गहनता से समझते हैं। इस तरह विद्यार्थी प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, पुनरुद्धार (पुनर्स्थापन) तथा पुनर्जनन की संकटमयी महत्ता और अपेक्षित सार्थक प्रयासों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास करते हैं।

माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा एक ऐसा विषय है, जिसका अध्ययन सभी विद्यार्थियों को आवश्यक रूप से करना है। यहाँ पर्यावरणीय शिक्षा एक अंतःविषयात्मक क्षेत्र का हिस्सा है, जिसके लिए एक विशेष पाठ्यचर्या प्रारूप का निर्धारण किया गया है। इस स्तर पर विद्यार्थी पर्यावरण से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर समग्र समझ विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जहाँ विद्यार्थियों में पाठ्यचर्यक क्षेत्र की समझ का उपयोग अन्य पाठ्यचर्यक क्षेत्र में कर सकने की क्षमता का विकास हो सकेगा। यहाँ विद्यार्थियों द्वारा अपने पूर्वज्ञान का उपयोग कर विभिन्न विषयों से संबंधित एकीकृत समझ विकसित करने, पर्यावरणीय मुद्दों से संबंधित ज्ञान को गहन करने, उनका आकलन करने, मीडिया और सामाजिक बयानों एवं चर्चाओं पर आत्मनिर्णय कर सकने हेतु जाँच, विश्लेषण, संश्लेषण, प्रश्न, समालोचना आदि शृंखलाओं के माध्यम से स्वतंत्र निष्कर्ष निकालने की क्षमता को विकसित कर सकेंगे। इस स्तर पर पाठ्यचर्या का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का पर्यावरण की ओर ध्यान आकर्षित करने के अलावा उनमें नैतिक दृष्टिकोण का विकास करना भी है। अतः उनमें पर्यावरण से संबंधित विभिन्न मुद्दों, घटनाओं, प्रभावों और अपेक्षाओं से ओत-प्रोत नैतिक-क्रियाओं के प्रति लगाव उत्पन्न करवाना होगा। सामाजिक पारिस्थितिकी के संदर्भ में समाज और पर्यावरण के बीच के अंतर्संबंधों की समग्र समझ को विद्यार्थियों में विकसित करने के लिए, विज्ञान एवं सामाजिक-विज्ञान के वैचारिक

ढाँचे और तरीकों को एकीकृत कर दोनों के मध्य अंतःविषयक दृष्टिकोण उत्पन्न करने पर बल देना आवश्यक है। सामाजिक-विज्ञान की विचारधारा के केंद्र में स्थित समानता, पर्यावरणीय न्याय और मानव कल्याण जैसी संकल्पनाएँ छिपी हुई हैं जो समाज के सतत विकास हेतु मौलिक भी हैं, अतः इनका उपयोग किया जाना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा, विद्यार्थियों को पर्यावरणीय-क्षरण की रोकथाम, जीव-जंतुओं की विभिन्न प्रजातियों के अस्तित्व से संबंधित मुद्दे, वन, जल और नदियों जैसे प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग से जुड़े हुए प्राचीन परंपरागत प्रथाओं में निहित ज्ञान को पुनर्विकसित करने (जीवन शैली में उतारने) के लिए प्रोत्साहित करेगी।

पर्यावरणीय शिक्षा को पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने की भावी रणनीति

प्राकृतिक पर्यावरण एवं उसका संरक्षण समसामयिक बौद्धिक जगत का आधुनिक विषय एवं चिंतनीय क्षेत्र है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भी तदनुरूप एक समग्र शिक्षा हेतु शिक्षार्थी में आलोचनात्मक चिंतन, जिज्ञासु तथा खोजपूर्ण प्रवृत्ति, नवाचार की उपादेयता तथा चर्चा एवं विश्लेषण पर आधारित सीखने-सिखाने की विधियों को प्रोत्साहित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों पर आधारित एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 ने विद्यालयी पाठ्यचर्या के व्यावहारिक रूपरेखा को बड़े ही बारीकी से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। क्रियान्वयन के बाद इसके बहुत ही प्रभावकारी परिणाम दृष्टिगोचर भी होंगे। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की सिफारिशों पर आधारित पर्यावरणीय शिक्षा की पाठ्यचर्या हेतु कुछ व्यावहारिक सुझाव इस प्रकार हो सकते हैं—

- पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या में पर्याप्त भेद और प्रभाविता-क्षमता वस्तुतः सर्वविदित है। एक समृद्ध पाठ्यचर्या न केवल ज्ञानात्मक स्तर को प्राप्त करवाने में सक्षम होती है, वरन अधिगम के उच्च स्तरों तथा व्यवहार परिमार्जन व परिशोधन की भी क्षमता से युक्त होती है।
- किसी भी संकल्पना को सीखने में जितने ही अधिक ज्ञानेन्द्रियों को सक्रिय बनाया जाएगा सीखना उतना ही अधिक प्रभावशाली एवं स्थायी होगा।
- विद्यालयी स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा की संकल्पनाओं के प्रति व्यवस्थित समझ उत्पन्न करने के लिए बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा का उपयोग करते हुए पाठ्यचर्या आयोजन करना चाहिए। इसके लिए बच्चों को प्रकृति से जोड़ने के लिए—पौधों, जानवरों, कीटों और पक्षियों का संवेदनशील अवलोकन करवाना चाहिए। इसके साथ ही पर्यावरण (विशेषतः पक्षियों, पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं, पहाड़ों, नदियों आदि) से निकलने वाली कलरव ध्वनियों, प्रकृति में गूंजते स्वरों आदि का रसास्वादन उनके पाठ्यचर्या का अंग के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- प्रारंभिक स्तर पर 'स्वयं के क्रियाकलापों' द्वारा सीखने का अवसर मिले, इसके लिए शैक्षणिक प्रक्रियाओं में प्रकृति की देखभाल (जैसे— पौधारोपण, जल संरक्षण, जीव-जंतुओं का अवलोकन आदि) पर बल दिया जाना चाहिए।

- सभी चारों स्तरों पर अलग-अलग शिक्षण-उद्देश्यों, शिक्षण-विधियों तथा अपेक्षित परिणामों को प्राप्त करने में सहयोग देने वाली विविधतापूर्ण गतिविधियों एवं पाठ्यसहगामी क्रियाओं से परिपूर्ण पाठ्यचर्या का आयोजन किए जाने की आवश्यकता है।
- अंतःविषयक प्रकृति और पर्यावरणीय शिक्षा की पाठ्यचर्या को प्रभावी बनाने में विभिन्न विषयों में निहित प्रकरणों, प्रसंगों, संदर्भों आदि के साथ-साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति, जीवनशैली और साहित्यों की सहायता ली जानी चाहिए है। वैदिक साहित्य प्रत्येक आयाम से अनुकरणीय है, क्योंकि इन साहित्यों में मनुष्य और प्रकृति के लौकिक एवं अलौकिक दोनों अंतर-संबंधों की तार्किक विवेचना मौजूद है।
- पर्यावरणीय शिक्षा के पाठ्यचर्या-आयोजन में पारिस्थितिकी, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों के मध्य अंतर्संबंध स्थापित करते हुए विद्यार्थियों की समझ को विकसित किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों में प्रकृति और पर्यावरण के प्रति एक सहानुभूतिशील रवैया विकसित करने की दृष्टि से शिक्षण प्रक्रिया आयोजित की जानी चाहिए।
- पर्यावरणीय शिक्षा की पाठ्यचर्या भौगोलिक विशेषताओं की विविधता से परिपूर्ण होनी चाहिए, जिसमें जीव-जंतु और वनस्पतियों को अवलोकन के माध्यम से जानने और समझने के अवसर प्राप्त हों।
- पर्यावरणीय संकल्पनाओं से जुड़े मुद्दों को दैनिक जीवनशैली के अनेकानेक उदाहरण द्वारा सीखने के अवसर देने चाहिए, जो विद्यार्थियों के लिए आजीवन उपयोगी एवं संस्मरणीय बना रहे।
- पर्यावरणीय शिक्षा को विविधतापूर्ण बनाने हेतु विभिन्न बहुमुखी गतिविधियों जिनमें — वृत्तचित्र, यात्राएँ, विशेषज्ञों से संवाद, समूह परियोजनाएँ, निबंध-लेखन आदि की सहायता ली जानी चाहिए।
- पर्यावरणीय सजगता तथा तत्संबंधी मूल्यों के विकास हेतु पाठ्यचर्या को विद्यार्थी के स्वाभाविक प्रकृति, सामाजिक वातावरण, पारस्परिक संबंधों की समझ, अंतःक्रिया तथा रुचि व क्षमताओं पर आधारित किया जाना चाहिए।
- पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति न केवल कारण एवं प्रभाव संबंधी नवीन दृष्टिकोण का विकास करना चाहिए, बल्कि उनमें उपचारात्मक तथा सकारात्मक संभावनाओं के प्रति भी नवीन प्रवृत्तियों और दृष्टिकोणों को विकसित किए जाने चाहिए।
- सकारात्मक उदाहरणों के माध्यम से पर्यावरणीय क्षति की भरपाई हेतु अपेक्षित व्यवहार और जीवनशैली से संबंधित ऐसे कौशलों के विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो न केवल व्यक्ति, वरन समुदायों और राष्ट्र के हितों पर भी लागू हों एवं अपेक्षित व्यवहार के उदाहरण प्रस्तुत करें।

- विद्यार्थियों में मानव समाज और प्राकृतिक पर्यावरण की परस्पर निर्भरता को समझाने के लिए संस्कृतियों, प्रथाओं आदि में मौजूद मानव समुदाय और पर्यावरण के मध्य अंत:संबंधों को उजागर करना, उनकी सराहना करना और यह रेखांकित करना कि प्राकृतिक व्यवस्था कैसे उनकी और अन्य सह-जीवियों के लिए जीवन की आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करती है। साथ ही साथ पर्यावरण के बदलाव के साथ-साथ जीवन की परिस्थितियाँ कैसे बदलती हैं। इन सभी गुत्थियों को समझाने के लिए उन्हें छोटी-छोटी खोज, सर्वेक्षण, यात्राएँ और अवलोकन आदि का अवसर देना चाहिए।
- विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अनुराग विकसित करने के लिए लोक-कथाएँ, लोकगीत, मौखिक इतिहास और पर्यावरण से जुड़े स्थानीय मामलों के अध्ययन आदि को भी शामिल किया जाना चाहिए।
- मिडिल स्टेज में पर्यावरण से संबंधित अवधारणाओं को विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में एकीकृत किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी अगले स्तर पर तत्संबंधी विचारों की गहरी समझ विकसित करने में सक्षम बन सकें।
- विद्यार्थियों को विज्ञान के माध्यम से जहाँ प्राणियों की विविधता, परिवेश, अनुकूलन, जीवन के लिए आवश्यक परिस्थितियों आदि संकल्पनाओं को सिखाया जाना आवश्यक है। वहीं सामाजिक विज्ञान के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों का स्थानिक वितरण, समाज की प्रत्येक इकाई तक उन संसाधनों की उपलब्धता, वितरण-असमानता आदि पक्षों की गहनता से परिचित करवाया जाना भी आवश्यक है। इस तरह विद्यार्थियों, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, पुनरुद्धार तथा पुनर्जनन की संकटमयी महत्ता और अपेक्षित प्रयासों की सार्थकता के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास किया जा सकता है।
- माध्यमिक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा एक अंत:विषय क्षेत्र का हिस्सा है, यहाँ विद्यार्थियों में जाँच, विश्लेषण, संश्लेषण, प्रश्न, समालोचना आदि शृंखलाओं के माध्यम से स्वतंत्र निष्कर्ष निकालने की क्षमता विकसित करते हुए, विभिन्न विषयों से संबंधित पर्यावरणीय मुद्दों की ज्ञान को गहन करने, उनका आकलन करने, मीडिया और सामाजिक बयानों व चर्चाओं पर अपना मत विकसित कर सकने की क्षमता का विकास किया जाना चाहिए।
- माध्यमिक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को पर्यावरणीय-क्षरण की रोकथाम, जीव-जंतुओं की विभिन्न प्रजातियों के अस्तित्व से संबंधित मुद्दे; वन, जल और नदियों जैसे प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग से जुड़े हुए, परंपरागत प्रथाओं में निहित ज्ञान को पुनर्विकसित करते हुए जीवनशैली में उतारने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बदलती वैश्विक परिस्थितियों और युवाओं के भविष्य को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है। यह वर्ष 2030 तक सभी को

अच्छी शिक्षा देने और जीवन-भर सीखने के अवसर बढ़ाने के लक्ष्य पर काम कर रही है। दुनिया में शिक्षा के तरीके, संसाधन और तकनीक तेजी से बदल रहे हैं, इसलिए शिक्षा व्यवस्था में भी बदलाव जरूरी है। यह नीति न केवल कोरोना महामारी जैसे संकटों से सीख लेकर भविष्य की तैयारी करना चाहती है, बल्कि प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की कमी जैसी समस्याओं पर भी ध्यान देती है। दशकों से इन समस्याओं को हल करने के प्रयास हो रहे हैं, लेकिन ठोस परिणाम नहीं मिले हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह स्वीकार किया गया है कि भविष्य में ऊर्जा, भोजन और स्वच्छ जल जैसी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए समाधान खोजने होंगे। इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की रूपरेखा तैयार की गई है, जिसका सही तरीके से लागू होना जरूरी है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023. (अंतिम संस्करण)*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf

———. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NCF-School-Education-Pre-Draft.pdf